REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2018

पालनपुर के मुस्लिम स्थापत्य

डा. निलेशकुमार जी. वसावा
आसि.प्रोफसर, सरकारी विनयन कोलेज वांकल, जी.सुरत.

❊ सारांश :

ई.स.१२९९-१३०४ में गुजरात में मुस्लिम सत्ता स्थपाई इस के पहले सदीओ से गुजरात में खास करके सागरतटे भद्रेश्वर, प्रभास, मांगरोण, खंभात, रांदेर आदि स्थलो पर तथा पालणपुर इत्यादि दूसरे महत्व के स्थलो पर बहोत सी ऐसी मुस्लिम वासहतें थी।

गुजरात की यह मुस्लिम वसाहतो में उनकी सांप्रदायिक और लौकिक इमारतें मस्जिदें, मकबरा, रहठाण या ऐसे दूसरे मकान अस्तित्व में आये थे। चौलुक्य नरेश सिध्धराज जयसिंह के समय के मिनारो का सविस्तार उल्लेख १३मी सदी के दूसरे-तीसरे दशक में खंभात में कम समय रह चूके विख्यात लेखक मुहंमद अल्फोने अपने पुस्तक के समय में खंभात में हुए कोमी विखवाद गीरा दिय थे लेकिन पाटण-नरेश के आदेश और सहाय से दोनो का पुनः निर्माण हुआ।

उपरांत गुजरात के अलग अलग जगाओं से मीला हुआ मृत्युलेख पर से ऐसा सहज अनुमान हो सकता है. इस समय दरम्यान ज्यादा संख्या में मकबरा या रोजे बंधाये होंगे।

गुजरात में ही ८ मी सदी से १३ मो सदी दरम्यान बडी संख्या में मस्जिदें, जुमा मस्जिदें, मकबरा आदि बंधाये होने चाहिए। इस इमारतों का निर्माण ज्यादातर वैभवशाली पैसेदार वेपारीओ द्वारा हुआ हो ऐसा लगता है। लेकिन इसमें से ज्यादातर मस्जिदें अस्तित्व में न होने से उनकी स्थापत्य शैली कैसी होती है, यह कहना मुश्किल है।

उपर के संक्षिप्त वर्णन पर से ऐसा कह सकते है कि गुजरात में ई.स.१३०४ सुधी में बंधायी हुई इस्लामी इमारतो में लाक्षणिक इस्लामी स्थापत्य के मूलभुत अंश नहिवत थे। इस समय की ऐसी इमारतें जिस काम के लिए निर्मित बनाई थी उस के सिवा स्थापत्य के सिध्धांतो पर यह मस्जिदें, मकबरा, नगरकोटा और आदि का निर्माण हुआ हो ऐसा लगता है।

❊ मुस्लिम स्थापत्यो :

१. जामा मस्जिद :

दीवान गझनीखान के समय में १७मी सदी में यह मस्जिद में बांधकाम की शुरुआत हुई। उसका क्रमशः विकास हुआ। दीवान शेरमहंमदखानजी के समय में यह मस्जिद में विकास पूर्ण कक्षा पर पहुँचा था।

मुस्लिमो की धार्मिक इमारतों में मस्जिद में दरगाह, कबर, रोजा, इदगाह, मकबरो आदि जबकी उनकी लौकिक इमारतो में शासको के महेल और दरबार खंडो का समावेश होता है। मस्जिद मुस्लिमो का इबादतगृह है।

पालणपर में रावजीवोरा मस्जिद, शियावोरा मस्जिद, बडी बजार में काश्मीरी मस्जिद, फरीद जमादार की मस्जिद आदि मस्जिदें आयी हुई है।

२. मुरसद बावा की दरगाह :

सूफो संत मुरसद साहब अफघानिस्तान के रहीश थे और पुश्तु भाषा बोलते थे। काश्मीर तरफ से फिरते फिरते पालणपुर में आकर मीरा दरवाजा झोंपडी में रहने लगे। उस समय दीवान श्री शेरमहंमदखानजी गादी पर थे। वह हिंदु-मुस्लिम धर्म के सभी फकिरो को आवकार देते थे और जरुरी मदद भी करते थे। उनको यह सूफो संत में श्रद्धा थी। इस संत ने पालणपुर में सालो तक निवास किया। ई.स.१९०६ में उनकी मृत्यु हुई। दीवानश्री शेरमहंमदखानने मीरा दरवाजा बहार इस सूफी संत की दरगाह बनवाई। यह दरगाह पर हर साल उनकी पूण्य तिथि पर मेला लगता है।

३. संत अनवर काजीनी दरगाह :

मुरसद बावा की दरगाह के पास सूफी संत अनवर काजी की दरगाह है। वह बिसनगर के वतनी थे। आध्यात्मिक सूफी संत अनवरकाजी साहब ई.स.१९१५ में पालणपुर में आये थे। दीवान साहबने उनको खास आग्रह करके राजगढी के पास के चंद्र महलमें ठहराया। थोडे समय में वह बीमार हुए। ७३ साल की उंमर में ई.स.१९१६ में उनका अवसान हुआ। शाही ठाठ माठ के साथ उनके जनाजे को हजरत मुरसद साहब की दरगाह में लाया गया और दरगाह के मेदान में दक्षिण भाग में उनको दफन किया और उस जगा पर दीवानश्री शेरमहंमदखान के समय में सैयद गुलाबमियां के हाथो से दरगाह बनाई उस के बाद के वर्षो से मुरसद साहब तक चला।

४. अमीरशाह बापुनी दरगाह :

तीसरे सूफी संत थे अमीरशाह बापु। वह पालणपुर के वतनी थे। इस औलिया फकिर की दरगाह भी यहीं पर आई हुई है। कार्तिकी पूनम के बाद हर साल यहाँ उर्स होता है। जो मुरसद के मेले के नाम से जाना जाता है। यह उर्स मेले प्रसंग में हजारो श्रद्धालु हररोज आकर इन महान आत्माओ को फ्ल चढाकर श्रद्धांजलि अर्पित करते है और मन्नते मानते है। यह मेला हिंदु-मुस्लिम एकता का प्रतिक है।

५. इदगाह :

इद याने खुशी, गाह यानी जगा. धार्मिक बांधकामो में इदगाह में खुली विशाल जगह होती है। इद-उल-फित्र के दिन इदगाह में समूह में इबादत होती है। ई.स.१२२६ में पाटण के राजवी भीमदेवर ने पालणपुर के साथ संघर्ष किया था। उनके लश्कर में भील और कोली थे। वह लूटफाट करके प्रजा को हेरान करते। उस समय ९ सैयद हज पर निकले थे। उनका यहाँ पर मुकाम था। उस जगा पर वह शहीद हुए और उसके पास इदगाह बनाई।

❊ संदर्भसूचि :

१. पटेल (डॉ.) दिपकभाई एम., ''पालनपुर राज्य का इतिहास'' (इ.स.१६३५ से १९४८), प्रकाशक : दामिनी पब्लिकेशन, अहमदाबाद, इ.स.२०१३
२. संपादक डॉ.सैयद खूबमीयां आझाद, स्मृति का लोक मेला, प्रकाशन समिति, इ.स.१९८२
३. सैयद गुलाबमीयां अब्दुमीयां, 'पालनपुर राज्य का इतिहास', भाग-२

डा. निलेशकुमार जी. वसावा
आसि.प्रोफसर, सरकारी विनयन कोलेज वांकल, जी.सुरत.